Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

Aquifer Open Study Notes (Book Intros)

This work is an adaptation of Tyndale Open Study Notes © 2023 Tyndale House Publishers, licensed under the CC BY-SA 4.0 license. The adaptation, Aquifer Open Study Notes, was created by Mission Mutual and is also licensed under CC BY-SA 4.0.

This resource has been adapted into multiple languages, including English, Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文).

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

EPH

इफिसियों

इफिसियों

पौलुस मसीह में परमेश्वर द्वारा विश्वासियों पर बरसाई गई अपार भलाई से अभिभूत है, तथा अन्यजातियों को यहूदियों के साथ एक नए समुदाय में जोड़ने की उसकी अद्भुत योजना से भी प्रभावित है - कलीसिया, मसीह की देह है। यहाँ, पौलुस पूरे नए नियम में मसीही जीवन का सबसे बेहतरीन वर्णन करता है। यद्यपि यह पत्र जेल से लिखा गया है, यह पत्र आनन्द, प्रशंसा और धन्यवाद से भरा हुआ है। यह मसीह में परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह के आश्चर्य का एक उपयुक्त उत्तर है, जो उसके प्रेम को जानने के लिए चुने गए लोगों पर बहुतायत से उंडेला गया है - अन्यजातियों के साथ-साथ यहूदियों पर भी।

परिस्थिति

पौलुस की तीसरी सुसमाचार की यात्रा (ईस्वी 53–57) इफिसुस पर केंद्रित थी, जो रोमी प्रांत के आसिया की राजधानी और बंदरगाह शहर था, जिसे अब हम तुर्किये कहते हैं। पौलुस के समय में, इफिसुस रोमी साम्राज्य का चौथा सबसे बड़ा शहर था, जिसकी जनसंख्या लगभग 500,000 थी। कई लोग प्रसिद्ध आर्तिमिस के मंदिर को देखने के लिए इस शहर में आते थे।

प्रारंभिक संक्षिप्त यात्रा के बाद (देखें प्रेरि 18:19–21), पौलुस इस बड़े और समृद्ध शहर में दो से तीन वर्षों के लिए लौटे (देखें प्रेरि 19:1–20:1)। यह उनके लिए एक कठिन समय था: उन्हें बहुत विरोध और अत्याचार का सामना करना पड़ा (देखें प्रेरि 19:21–41; 1 कुरि 15:32; 2 कुरि 1:8–9; 11:23–27)। लेकिन इस समय के दौरान, प्रांत भर के लोगों ने पहली बार मसीह का सुसमाचार सुना, और विश्वासियों के कई छोटे समूह बने, जो प्रांत के गांवों और कस्बों में घरों में मिलते थे (प्रकाशितवाक्य में संबोधित सात कलीसिया संभवतः इस समय के दौरान उत्पन्न हुए)। इन कलीसियाओं में से कुछ (उदाहरण के लिए, कुलुस्से में) पौलुस के द्वारा परिवर्तित लोगों के द्वारा शुरू किए गए थे और उनका पौलुस के साथ कोई प्रत्यक्ष परिचय नहीं था।

यह स्पष्ट नहीं है कि सुसमाचार के बारे में इन कलीसियाओं की समझ कितनी सटीक थी, लेकिन हम कुलुस्सियों को लिखे पौलुस के पत्र से जानते हैं कि उनमें से कुछ ने झूठी शिक्षा और विकृत धारणाओं का सामना किया था। इफिसियों में, पौलुस इस धारणा से चिंतित है कि गैर-यहूदी मसीही यहूदी मसीहियों से कमतर या अलग थे, और पूरी तरह से परमेश्वर के "नए इस्राएल" का हिस्सा नहीं थे। इस गलतफहमी को जन्म देने वाली बात स्पष्ट नहीं है—यहूदी मसीहियों द्वारा भेदभाव? यहूदी मसीहियों के प्रति गैर-यहूदियों की घृणा?—लेकिन यह रोमी दुनिया भर में यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच पारंपरिक जातीय तनाव को दर्शाता है। पौलुस इस बात के प्रति भी चिंतित था कि लोगों में इस बात के प्रति जागरूकता की कमी है कि परमेश्वर के लोगों को आस-पास की दुनिया से बिलकुल अलग तरीके से जीना है।

पौलुस ने बन्दीगृह से एक पत्र लिखा जो नए परिवर्तित लोगों से भरी इन कलीसियाओं के लिए लिखा गया लगता है। उनके आत्मिक पिता के रूप में, और अन्यजातियों तक सुसमाचार ले जाने के लिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त व्यक्ति के रूप में, पौलुस को इस बात की गहरी चिंता थी कि इन नए विश्वासियों को उन सभी बातों की सही समझ हो जो परमेश्वर ने उन्हें मसीह में दी हैं और जिस तरह का जीवन परमेश्वर चाहता है कि वे जीएँ।

सारांश

परमेश्वर ने जो कुछ किया है, उसके लिए प्रशंसा से भरे हृदय के साथ, पौलुस ने यीशु मसीह में परमेश्वर के उद्धारक अनुग्रह के सुसमाचार का सुन्दर सारांश दिया है—इस बात पर बल देते हुए कि यह यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातियों के लिए भी है (अध्याय 1–3)। वह इस बारे में व्यावहारिक निर्देश भी देता है कि विश्वासियों को किस तरह से प्रतिक्रिया में जीना चाहिए, अपने पिछले जीवन से हटकर वास्तव में अच्छा और मसीह जैसा बनना चाहिए (अध्याय 4–6)।

संक्षिप्त परिचय (1:1–2) के बाद, पौलुस मसीह में विश्वासियों को प्राप्त हुए अद्भुत अनुग्रह के लिए परमेश्वर की स्तुति करते हैं (1:3–14)। अपने सर्वोच्च प्रेम में, परमेश्वर ने उन्हें चुना है, उन्हें क्षमा किया है, उन्हें अपने परिवार में लाया है, उन्हें अपनी सन्तान बनाया है, और उन्हें अनंत आशीष देने की प्रतिज्ञा किया है। उन्हें अपनी आत्मा देकर, उसने उन्हें अपना बना लिया है ताकि वे हमेशा उसके अनुग्रह की स्तुति कर सकें। फिर पौलुस प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर उन्हें आत्मिक समझ

दे ताकि वे उनके लिए किए गए सभी कामों की पूरी गहराई को समझ सकें (1:15–23)। हालाँकि वे परमेश्वर के क्रोध के पूरी तरह से योग्य थे, लेकिन वे परमेश्वर के अनुग्रह से बचाए गए हैं, न कि उनके द्वारा किए गए किसी काम से, बल्कि केवल मसीह से जुड़ने से (2:1–10)। गैर-यहूदियों के रूप में, वे परमेश्वर और उसके आशीष से पूरी तरह से अलग-थलग थे, लेकिन परमेश्वर की दया में, मसीह के मेल-मिलाप के कार्य के माध्यम से, वे अब परमेश्वर के परिवार के सदस्य बन गए हैं, यहूदी मसीहियों के पूरी तरह से बराबर। वे अब बाहरी नहीं हैं (2:11–22)।

पौलुस को परमेश्वर ने यह अद्भुत सुसमाचार उन तक पहुँचाने के लिए नियुक्त किया था (3:1–13)। उनके लिए उनकी दूसरी प्रार्थना (3:14–21) यह है कि परमेश्वर उन्हें आत्मिक सामर्थ्य दे, उन्हें उनके विश्वास और प्रेम में मजबूत करे, उन्हें मसीह के उद्धारक प्रेम को पूरी तरह से समझने में सक्षम करे, और उन्हें स्वयं परमेश्वर के जीवन और शक्ति से भर दे।

इसके जवाब में, उन्हें नम्रता, अनुग्रह, और प्रेम का जीवन जीना चाहिए - एक ऐसा जीवन जो उनके बुलावे के योग्य हो, क्योंकि वे मसीह के शरीर का निर्माण करने के लिए अपने परमेश्वर-प्रदत्त वरदानों का उपयोग करते हैं (4:1–16)। उन्हें अपने पूर्व पापपूर्ण तरीकों के अंधकार से मुड़कर प्रकाश की संतान के रूप में जीना चाहिए। पवित्र आत्मा में दया और प्रेम से भरे हुए, और मसीह के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, उनके जीवन को सभी चीजों में परमेश्वर को प्रसन्न करना है (4:17–5:20)।

घर पर उनके सभी रिश्ते - पति और पत्नी, माता-पिता और बच्चों, स्वामी और दासों के बीच - सम्मान और प्रेम से भरे होने चाहिए, क्योंकि वे मसीह के लिए जीते हैं (5:21–6:9)। अंत में, उन्हें शैतान से अपनी रक्षा करने के लिए परमेश्वर के कवच को धारण करने की चेतावनी दी जाती है (6:10–20)। पौलुस कुछ व्यक्तिगत शब्दों और एक आशीर्वाद वचन के साथ अपनी बात समाप्त करते हैं (6:21–24)।

लेखक

इफिसियों को पारंपरिक रूप से पौलुस को समर्पित किया जाता है, जैसे कि अन्य बन्दीगृह पत्र (फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, और फिलेमोन) हैं। हालांकि, शब्दावली, शैली, रूप, संदर्भ, उद्देश्य, और धर्मशास्त्रीय जोर के आधार पर, कुछ लोग मानते हैं कि इफिसियों को पौलुस के बाद के एक शिष्य द्वारा लिखा गया था। अन्य इसे पौलुस का एक मूल पत्र मानते हैं जिसे बाद के संपादक द्वारा पुनः तैयार किया गया है।

हालांकि, यह पत्र पौलुस के विचारों और शैली के साथ पूरी तरह से संगत है। पौलुस के निर्विवाद पत्रों के साथ कथित अंतर को निम्नलिखित के माध्यम से समझाया जा सकता है: (1) पौलुस की अपनी शब्दावली और शैली में विविधताएं; (2) इस पत्र की अलग सामग्री (उदाहरण के लिए, इफि 1–3 में आशीर्वाद, स्तुति, और प्रार्थना के विस्तृत खंड शामिल हैं); (3) पौलुस के अपने विचारों में विकास; (4) पौलुस का सचिवों का उपयोग (देखें रोम 16:22), जिन्होंने अपने विचारों को अपने शब्दों में रखने में कुछ हद तक स्वतंत्रता का प्रयोग किया होगा; और (5) इफिसियों की प्रकृति एक सामान्य पत्र के रूप में कई कलिसियाओं को भेजी गई, न कि सिर्फ एक को। इस बात से इनकार करने का कोई ठोस कारण नहीं है कि पौलुस ने इसे लिखा था।

प्राप्तकर्ता

हालाँकि पारंपरिक रूप से यह समझा जाता है कि यह पत्र इफिसुस की कलीसिया को लिखा गया था, यह पत्र आसिया के रोमी प्रांत की कई अलग-अलग कलीसियाओं में प्रसारित किए जाने वाले एक सामान्य पत्र के रूप में लिखा गया हो सकता है। इस राय का आधार (1) कई शुरुआती पांडुलिपियों *में इफिसुस* ((इफि 1:1) के परिचयात्मक शब्दों के लोप और (2) इफिसियों में व्यक्तिगत अभिवादन या संदर्भों की कमी पर आधारित है - यदि यह पत्र इफिसुस की कलीसिया के लिए लिखा गया था, तो यह एक आश्चर्यजनक चूक थी, क्योंकि पौलुस शहर में काफी समय तक रहा था और वहाँ की कलीसिया से उसका व्यक्तिगत परिचय था (देखें प्रेरि 19:10; 20:31)।

लेखन की तिथि और स्थान

इफिसियों की पत्री (फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन के साथ) बंदीगृह पत्रों में से एक है, जिसे पारंपरिक रूप से रोम में 60–62 ईस्वी में या पौलुस को 64~65 ईस्वी के आसपास फांसी दिए जाने से कुछ समय पहले लिखा गया माना जाता है। इस तरह बंदीगृह पत्र पौलुस की आखिरी रचनाओं में से एक बन गया। हालाँकि, उन्हें इफिसुस की बंदीगृह से लिखे जाने के रूप में बेहतर समझा जा सकता है। 2 कुरिंथियों में, जिसे पौलुस ने इफिसुस छोड़ने के तुरंत बाद लिखा था, वह उस क्षेत्र में मिले कड़े विरोध का उल्लेख करता है और कई बार बंदीगृह में रहने का उल्लेख करता है; 2 कुरिन्थियों 11:23–27 देखें। यदि यह कारागृह पत्र इफिसुस से लिखे गए थे, तो यह उन्हें पौलुस के जीवन के शुरुआती समय में, लगभग 53~56 ईस्वी के आसपास रखता है।

अर्थ और संदेश

परमेश्वर के अनुग्रह के लिए स्तुति। शायद नए नियम की किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक, इफिसियों की पुस्तक उन लोगों के लिए परमेश्वर के उद्धारक अनुग्रह के प्रति कृतज्ञता से भरी हुई है जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं। केवल परमेश्वर के अनुग्रह से, विश्वासियों को चुना गया है, क्षमा किया गया है, उनके परिवार में बुलाया गया है, उन्हें संतान बनाया गया हैं, उनके अनन्त आशीष की प्रतिज्ञा किया गया है, और

अर्थ और संदेश

उन्हें हमेशा के लिए उनका होने के रूप में चिह्नित करने के लिए उन्हें पवित्र आत्मा का वरदान दिया गया है (इफि 1:3–14)। उद्धार को कभी भी अर्जित की गई चीज़ के रूप में नहीं देखा जा सकता है; यह एक विशुद्ध उपहार है (इफि 2:8–9)। परिणामस्वरूप, विश्वासियों को पता है कि उन्हें उनकी अद्भुत कृपा के लिए हमेशा परमेश्वर की स्तुति करने के लिए बुलाया गया है (इफि 1:6, 12, 14)। वे इससे कम कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि वे उसे सब कुछ देने के ऋणी हैं।

मनुष्य की निन्दित अवस्था। इफिसियों के पहले तीन अध्यायों में व्याप्त अनुग्रह की जागरूकता पौलुस द्वारा पाप और उस पर परमेश्वर के न्याय पर विपरीत जोर देने से और बढ़ जाती है। जो उसके पाठकों के लिए सत्य है, वह सभी के लिए सत्य है, क्योंकि सभी परमेश्वर के न्याय के अधीन हैं (देखें इफि 2:1–3, 12)। प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के अनंत न्याय के समक्ष दोषी और निंदित है, जो पाप को सहन नहीं कर सकता। यह अवधारणा आधुनिक सोच के लिए बहुत कठोर लगती है; इसके पीछे मनुष्य के पाप और परमेश्वर की परम पवित्रता के बारे में आज के अधिकांश पश्चिमी लोगों की तुलना में कहीं अधिक मजबूत दृष्टिकोण है। मसीह के अलावा, मनुष्य पाप से प्रेरित होते हैं और शैतान के अधीन होते हैं। इसलिए सुसमाचार प्रचार अत्यावश्यक है (देखें मर 16:15–16; तुलना करें रोम 9:1–3; 10:1)।

कलीसिया की एकता। परमेश्वर की अद्भुत योजना अन्यजाती लोगों को अपने परिवार में शामिल करना है (देखें इफि 2:11–3:6)। जातीय भेदभाव परमेश्वर के लिए कुछ भी मायने नहीं रखते और परमेश्वर के लोगों के लिए भी इनका कोई मतलब नहीं होना चाहिए (तुलना करें गल 3:28)। क्योंकि परमेश्वर ने सभी जातीय पृष्ठभूमि के लोगों को अपने कलीसिया में एक साथ जोड़ा है (देखें इफि 2:14–17; 3:6), विश्वासियों को जातीय मतभेदों पर विचार किए बिना विनम्रता, अनुग्रह और प्रेम में एक-दूसरे का गर्मजोशी से स्वागत करके जवाब देना चाहिए (देखें इफि 4:1–6; रोम 15:5–7)। कलीसिया में, किसी की पहचान केवल मसीह में उसके विश्वास से परिभाषित होती है।

मसीह की तरह जीना। इफिसियों 4–6 में, पौलुस हमें मसीही जीवन की एक सुंदर तस्वीर देते हैं जैसा कि इसे जीना चाहिए। विश्वासियों को अपने पिछले जीवन के अंधकार से दूर हो जाना चाहिए और पवित्र आत्मा से भरकर, प्रकाश के नए लोगों के रूप में जीना चाहिए, केवल वही खोजना चाहिए जो "भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है" है (इफि 5:9)। उन्हें दूसरों के प्रति नम्रता, ईमानदारी, सम्मान, दयालुता और प्रेम व्यक्त करना चाहिए। परमेश्वर के संबंध में, उनके जीवन को पवित्रता, महिमा और धन्यवाद से भरा होना चाहिए (देखें इफि 4:17–5:20)। विश्वासियों को मसीह की तरह बनना चाहिए और अपने सभी कार्यों और कथनों में उसे प्रतिबिंबित करना चाहिए (देखें इफि 4:13, 15; रोम 8:29)। मसीह में, उन्हें परमेश्वर की तरह बनने के लिए नया बनाया गया है (देखें इफि 4:24; 5:1–2)।

घर में आदर और प्रेम। इफिसियों 5:21–6:9 में, पौलुस उन लोगों के प्रति सम्मान और प्रेम दिखाने के महत्व पर जोर देता है जिनके साथ कोई रहता है। वह पारंपरिक सांस्कृतिक रिश्तों (पति और पत्नी, माता-पिता और बच्चों, और स्वामी और दासों के बीच के रिश्तों सहित) को बनाए रखता है और उनका सम्मान करता है, जबकि इस बात पर जोर देता है कि, सभी रिश्तों में, विश्वासियों का रवैया मसीह जैसा होना चाहिए।

आत्मिक युद्ध। इफिसियों 6:10–20 यह बताता है कि कैसे विश्वासियों को शैतान के खिलाफ अपने युद्ध में स्वयं की रक्षा करनी चाहिए। इस आत्मिक युद्ध में, विश्वासियों को अपनी खुद की संसाधनों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि प्रभु द्वारा प्रदान किए गए हथियारों का उपयोग करना चाहिए। महत्वपूर्ण रूप से, वर्णित सभी हथियार—दोधारी तलवार को छोड़कर—सभी रक्षात्मक हथियार हैं। यहाँ मसीहीयों को शैतान पर आक्रमण करने की कोई तस्वीर नहीं है। हालाँकि शैतान के विरोध को गंभीरता से लिया जाना चाहिए, लेकिन मसीही जीवन के बारे में पौलुस का दृष्टिकोण आक्रामक या आक्रामकारी अर्थ में आत्मिक युद्ध पर केंद्रित नहीं है।